लक्ष्मीपूजा का अर्थ श्रेष्ठगुणों को अपनाना

समुद्र मंथन में प्रकट हुई हर वस्तु के तिलए देवता एवं असुर सघर्ष कर रहे थे। श्री, सौदर्य और ऐश्वर्य की प्रतीक लक्ष्मी को पाने के लिए हर कोई लालायित था, इसलिए स्वयंवर का आयोजन किया गया। इसमें देव, असुर, ऋषि-मुनि सभी उपस्थित हुए। देवों के पास ऐश्वर्य था परन्तु वे भोगी थे। असुर शक्तिशाली थे, लेकिन वे धर्मविरुद्ध थे जीवन जीते थे और उनमें प्राणियों के प्रति प्रेम भी न था। ऋषि-मुनि दीर्घजीवी एवं ज्ञानी थे तो उन्होंने जीवन में संतुलन की जगह त्याग को प्रमुखता दे रखी थी। लक्ष्मी उसे चुनना चाहती थी जो श्रेष्ठ गुणों से पूर्ण हो, जो सबका पालन करता हो। ऐसे एकमात्र भगवान विष्णु थे। सो लक्ष्मी ने उनका वरण किया। उनके ीस चयन के पीछे जीवन मगं सफलता को जो महान सुत्र है, वह श्रेष्ठ बनने का।

एक अन्य कथा इसके तात्पर्य पर प्रकाश डालती है। रुक्मिणी लक्ष्मीजी से मिलने वैकुंठ पहुंची बातचीत में उन्होंने पूछा-देवी आप कैसे मुनष्य के पास और किन स्थानों पर रहती है? लक्ष्मीजी ने बताया जो मनुष्य मधुर बोलने वाला, कार्यकुशल, क्रोधहीन, श्रद्धावान, कृतज्ञ, संयशील और उदार होता उसके यहाँ मेरा निवास होता है। सचादचारी, धर्मज्ञ बड़े-बूढ़ो का सम्मान करने वाले, अच्दे कार्य करने वाले, क्षमाशील और बुद्धिवान मनुष्य के पास मैं सदा रहती हूं। जो स्त्री पति की सेवा करती है जिसमें क्षमा, सत्य, संयम, सरलता और सदगुण होते हैं मैं उनके समीप निवास करती हूँ। लक्ष्मी एक सिद्धांत भी है जो हमें श्रेष्ठ गुणों के आधार पर जीवन जीने की प्रेरणा देता है। यदि हम उन लोगों को देखें जिन्होंने अपने बल पर जीवन में सफलता के नये आयाम गढ़े हैं तो उनमें हम इन्हीं गुणों का समावेश पाते हैं। यही लक्ष्मी का पूजा का तात्पर्य है यानी श्री-श्रेष्ठता को अपनाकर स्वयं का विकास और राष्ट्र का संवर्धन।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com